समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

● प्रकाशन दिनांक : १५ अप्रैल २०१४ ● वर्ष : १७ ● अंक : १० (निरंतर अंक : २०२)

मासिक समाचार पत्र

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

जिस विद्यार्थी के जीवन में ऐहिक शिक्षा के साथ दीक्षा हो, प्रार्थना, ध्यान एवं उपासना के संस्कार हों, वह सुंदर सूझबूझवाला, सबसे प्रेमपूर्ण व्यवहार करनेवाला, तेजस्वी-ओजस्वी, साहसी, यशस्वी और महान बन जाता है ।

विनय शर्मा, पठानकोट (पंजाब)
'कौन बनेगा करोड़पति' शो में जीते रुपये २५ लाख

अमोल वाघ, धुलिया (महा.)
१०वीं में महाराष्ट्र में सर्वप्रथम

तांशु बेसोया, दिल्ली
५ साल की उम्र में दिल्ली की जोखिम भरी सड़कों पर ५ कि.मी. से अधिक कार चलाकर छोटे भाई की जान बचायी ।

अनुराधा अस्थाना, लखनऊ (उ.प्र.)
बी.ए. तृतीय वर्ष की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर राष्ट्रपतिजी से स्वर्णपदक प्राप्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त जादूगर आँचल, उदयपुर (राज.)
८००० से अधिक शो, 'राष्ट्रीय बाल पुरस्कार', 'नाट्य गौरव पुरस्कार' तथा रियालिटी शो में १० लाख रुपये का पुरस्कार

डॉ. राहुल कत्याल
'नेशनल रिसर्च डेवलपमेंट कॉरपोरेशन' के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित युवा वैज्ञानिक एवं फिजियोथेरेपिस्ट

राष्ट्रीय स्तर पर सफलता प्राप्त करनेवाले मेधावी विद्यार्थी

विद्यार्थी विशेषांक

नौनिहालों में सिंचित दिव्य संस्कार करेंगे विश्वगुरु भारत का संकल्प साकार

संस्कारी बालक बने महान और बढ़ाये देश की शान। बाल एवं युवा पीढ़ी को दिव्य संस्कारों से ओत-प्रोत करने के लिए पूज्य बापूजी की प्रेरणा से साधक पिछले ५० वर्षों से कई अभियान चला रहे हैं। इनमें से बच्चों के सर्वांगीण विकास का बीज 'बाल संस्कार केन्द्र' के रूप में बोया गया, जो आज विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। इसकी १७,००० से अधिक शाखाएँ भारत ही नहीं वरन् विश्व के कई देशों में फैल चुकी हैं।

बच्चों एवं युवाओं को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता तो मिले, साथ ही वे जीवन की हर परिस्थिति का मजबूती से सामना कर पायें इस हेतु पूज्य बापूजी हर व्यक्ति के अंतर में छुपी अनंत-अनंत योग्यताओं को सत्संग, मंत्रदीक्षा एवं यौगिक प्रयोगों के माध्यम से विकसित करने का मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। बच्चों के जीवन में यह सर्वश्रेष्ठ वैदिक ज्ञान आसानी से आत्मसात् कराने की पूज्यश्री की बड़ी ही सरल और सुंदर कला है, जिससे बच्चे हँसते-खेलते महानता की यात्रा सफलतापूर्वक कर लेते हैं। आइये देखते हैं पूज्य बापूजी बच्चों के जीवन में आनेवाली समस्याओं का सुंदर और सचोट निराकरण कैसे करते हैं।

टीवी, इंटरनेट, विडियो गेम्स, मोबाइल आदि के द्वारा समय बरबाद होने से बच्चे नैतिक और बौद्धिक पतन की ओर।

बापूजी के प्रेरणादायी सत्संग और गुरुकुलों, बाल संस्कार केन्द्रों तथा विद्यार्थी शिविरों से बच्चों को मिलता है उपरोक्त आदतों से छुटकारा और होता है जीवन का सर्वांगीण विकास।

देर रात तक जागने तथा सूर्योदय के बाद भी सोये रहने से जीवन निस्तेज।

बापूजी द्वारा बतायी गयी दिनचर्या अपनाकर समय पर शयन व ब्राह्ममुहूर्त में जागरण से जीवन ओजस्वी-तेजस्वी।

नींद से उठ के सीधा नाश्ता करने व टीवी देखने से बच्चे हो रहे हैं आलसी व कई बीमारियों से ग्रस्त।

स्नानादि करके योगासन, प्राणायाम आदि करने से शरीर चुस्त-दुरुस्त तथा मन प्रसन्न।

जन्मदिवस पर केक पर लगी मोमबत्तियों को फूँकने से थूक के कण केक में आते हैं और वह कीटाणुयुक्त केक खाने से कई बीमारियों को आमंत्रण।

बापूजी के अनुसार जन्मदिवस दीप जला के, बड़ों का आशीर्वाद लेकर, मित्रों में मधुर प्रसाद बाँट के तथा गरीबों की सेवा द्वारा मनाना।

वेलेंटाइन डे के दुष्प्रभाव से लाखों किशोर-किशोरियों के ओज-तेज की हानि, बड़ों के प्रति सम्मान में कमी तथा वृद्धाश्रमों की बढ़ोतरी।

मातृ-पितृ पूजन से बाल एवं युवा पीढ़ी का जीवन उज्ज्वल तथा माता-पिता व बुजुर्गों के आशीर्वाद से आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि।

(शेष आवरण पृष्ठ ३ पर)

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १७ अंक : १०
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०२)
१५ अप्रैल २०१४ मूल्य : ₹ ३.५०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क :

भारत में :

(१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५०
(३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में :

(१) पंचवार्षिक : US $ 50
(२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय,
संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८,
२७५०५०१०/११.

e-mail : 1) lokkalyansetu@ashram.org 2) ashramindia@@ashram.org
Website : 1) www.lokkalyansetu.org 2) www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

इस अंक में

- आप भी नारदजी के गुणों को अपना लो ४
- कलम किसी कीमत में न बेची ६
- संत-सम्मेलन, अहमदाबाद ७
- संत-सम्मेलन, सूरत ११
- दीपक चौरसिया को मिली सबसे बेकार पत्रकार की उपाधि १२
- 'अच्छा होता अगर तू भी सोया ही रहता' १३
- सफलतारूपी देवी तुम्हारा मार्ग फूलों से सजाने को खड़ी है १४
- छः दुर्गुणों का निकास, लाये जीवन में सर्वांगीण विकास १५
- ये गुलाबजामुन कोई छीन न ले ! १५
- पुण्यसलिला माँ गंगा १६
- यहाँ मिलती हैं विद्यार्थियों को तीनों विद्याएँ १७
- उच्च न्यायालय ने माँगा सूरत पुलिस से जवाब १८
- गर्मियों में अत्यंत लाभकारी : खीरा १९
- सफलता का महामंत्र २०
- आदर्श बालक की पहचान (काव्य) २०
- दंड से नहीं, कर्तव्यहीनता से डरो २१
- अपने ही जाल में फँसे गैंगरेप की झूठी स्क्रिप्ट बनानेवाले २२
- ज्ञानी की गति ज्ञानी जाने २३
- हिन्दू-मुसलमान सभी गाय माँ की हिफाजत करें २४

◆ टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS
रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

care WORLD
रोज सुबह ७-०० बजे

सुदर्शन NEWS
रोज सुबह ६.३० बजे

मंगलमय
www.ashram.org पर उपलब्ध

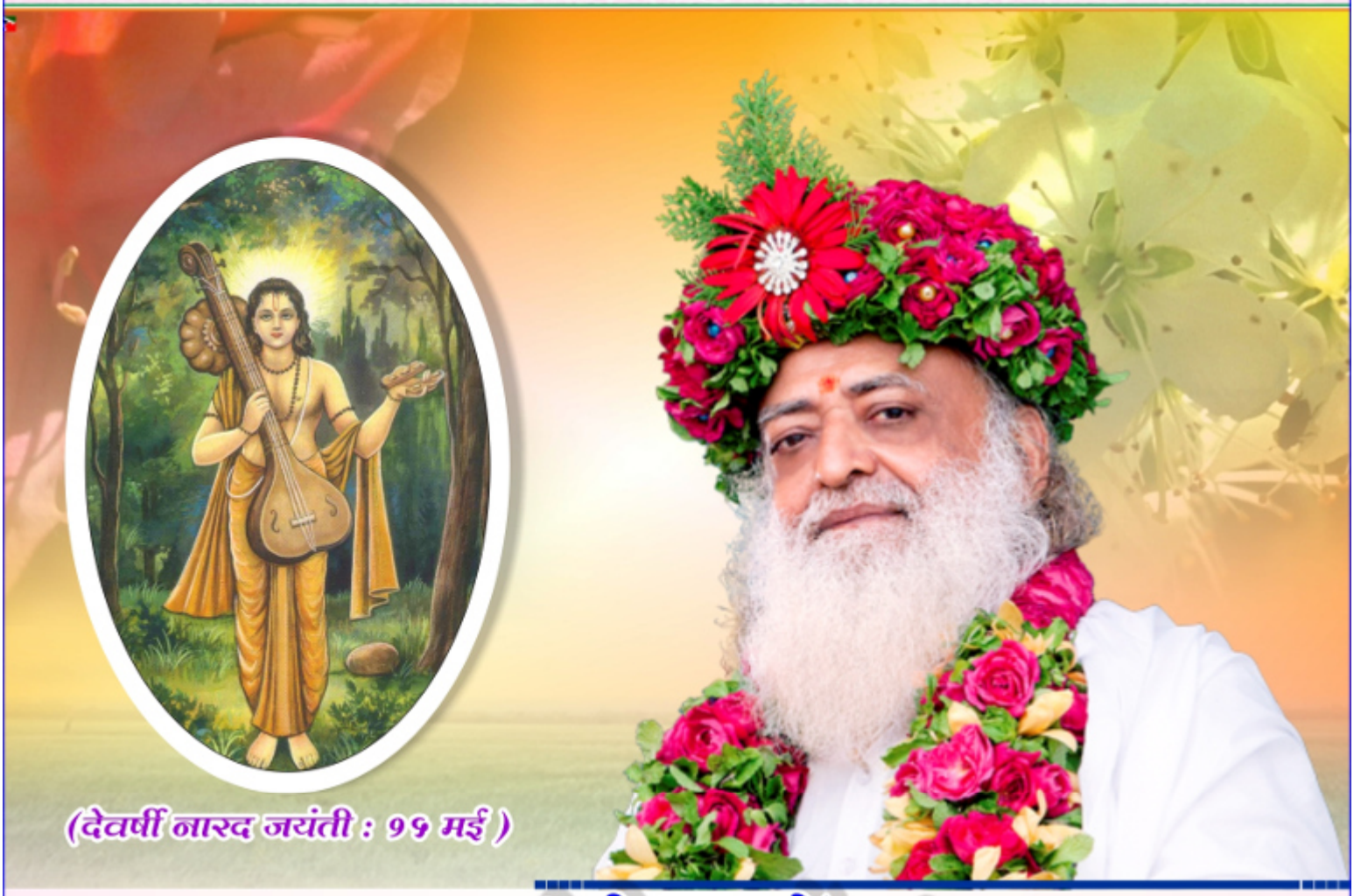

आप भी नारदजी के गुणों को अपना लो

-पूज्य बापूजी

एक बार भगवान श्रीकृष्ण से उनके प्रिय भक्त राजा उग्रसेन ने पूछा : ''केशव ! सब लोग देवर्षि नारदजी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं, आखिर नारदजी में ऐसा क्या है ?''

श्रीकृष्ण बोले : ''नारदजी प्रमादरहित स्मृति के धनी हैं। उनको किसीके प्रति दाह नहीं है। किसीकी सम्पदा देखकर ललचाते नहीं हैं और किसीकी विपदा देखकर नारदजी उपराम नहीं होते, विपदा मिटाने में सहभागी होते हैं।

नारदजी संयमी, सदाचारी हैं लेकिन संयम का अभिमान नहीं रखते। सद्गुणी हैं, नित्य हरिरस का पान करते हैं और दूसरों को भी कराते हैं इसलिए नारदजी सबके प्रिय हुए हैं। मुझ केशव को तो देवता और मनुष्य मानते हैं लेकिन दैत्य तो नहीं मानते हैं लेकिन नारदजी की बात तो सुर भी मानते हैं और असुर (दैत्य) भी मानते हैं। नारदजी नित्य भगवद्-गुणगान करके अपना हृदय भगवन्मय बनाये हुए हैं। उनको बीते हुए का शोक नहीं होता, वे भविष्य के सुख की लालसा नहीं करते और अपने सुखस्वरूप आत्मा-परमेश्वर की शरण में रहते हैं इसीलिए नारदजी सर्वत्र सम्माननीय, पूजनीय हैं।

नारदजी में शील का सद्गुण है । 'शील' का मतलब है किसीका अहित न चाहना, न सोचना, न करना । अपने द्वारा सभीका मंगल सोचना, मंगल चाहना, मंगल करना । नारदजी तेज, यश, बुद्धि, आत्मज्ञान व विनय है। वे कभी भी मलिन विचार को

महत्त्व नहीं देते । दुःख के भाव को फटकने नहीं देते । आनंद का उद्‌गमस्थान उन्होंने अपना चित्त बनाया है ।''

आप भी अपना चित्त नारदजी की तरह बना सकते हो । कुछ इधर-उधर देख चित्त खराब हो तो तुरंत सूर्यनारायण को देखें, मंदिर की पताका को देखें, कलश को देखें अथवा वंशीधर की मधुर-मधुर मुस्कान को मानसिक रूप से देखकर अपने चित्त को आनंद-उल्लास से भरे रखें ।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''नारदजी सुशील हैं, आनंद-अन्वेषी हैं, साथ-साथ में सात्त्विक भोजन, सात्त्विक शास्त्र, सात्त्विक स्थान और सात्त्विक संग के धनी हैं । नारदजी सांत्वना, प्रीति, ज्ञान और भक्ति देनेवाली सुंदर वाणी ही बोलते हैं ।

नारदजी सबका आदर भी करते हैं और भीतर-बाहर से पवित्र हैं । भीतर एक और बाहर दूसरी बात बनाने की अथवा झूठ-कपट का उपदेश-भाषण देने की गलती नारदजी नहीं करते । इसलिए सबके विश्वासपात्र हो जाते हैं ।''

आप-हम भी ये सद्‌गुण अपने में ला सकते हैं कि नहीं ? जरूर ला सकते हैं । और जितना लायेंगे उतने ही विश्वसनीय, निश्चिंत, निर्दुःख, निरहंकार हो जायेंगे और निष्पाप होने लगेंगे । जब अंदर एक और बाहर दूसरा करते हैं, तब हम लोगों का पाप बढ़ता है । जब अंदर के सत्य को दबाते नहीं और बोल देते हैं कि 'भैया ! ऐसा है...' तो आपकी

मुसीबतें सूली में से काँटा हो जाती हैं और मन पाप करने से भी बच जाता है ।

भगवान कहते हैं : ''नारदजी सृष्टिसंबंधी विद्या में निपुण हैं कि सृष्टि कैसे उत्पन्न होती है ? कैसे चलती है ? कैसे परिवर्तित होती है और इसमें सार तत्त्व क्या है ? मुझ चैतन्य की शरण में वे जब चाहें तब चले जाते हैं इसलिए नारदजी ज्ञानसम्पन्न, प्रेमसम्पन्न, सुखसम्पन्न, प्रशंसा के धनी, प्रशंसा के इच्छुक नहीं फिर भी प्रशंसनीय पुरुष हैं और इसलिए मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ ।''

भगवान ये उग्रसेन को निमित्त करके इसलिए बताते होंगे ताकि सारे लोग अपने चित्त में इस प्रकार के दिव्य गुण भरकर अपनी भगवत्सत्ता से, भगवद्-आनंद व भगवत्सुख से सम्पन्न हो जायें ।

शास्त्र वचनामृत

दैवे पुरुषकारे च लोकोऽयं सम्प्रतिष्ठितः ।
तत्र दैवं तु विधिना कालयुक्तेन लभ्यते ॥

'यह संसार दैव (भाग्य) तथा पुरुषार्थ पर अवलम्बित है । इनमें दैव तभी सुलभ (सफल) होता है, जब समय पर उद्योग (पुरुषार्थ) किया जाय ।' **(महाभारत, आदि पर्व : १२२.२१)**

यः समुत्पतितं क्रोधं क्षमयैव निरस्यति ।
यथोरगस्त्वचं जीर्णां स वै पुरुष उच्यते ॥

'जो हृदय में उत्पन्न हुए क्रोध को क्षमा के द्वारा उसी तरह निकाल देता है जैसे साँप अपनी पुरानी केंचुल को छोड़ देता है, वही पुरुष (मनुष्य) कहलाता है ।' **(वाल्मीकीय रामायण, सुं.कां. : ५५.६)**

कलम किसी कीमत में न बेची

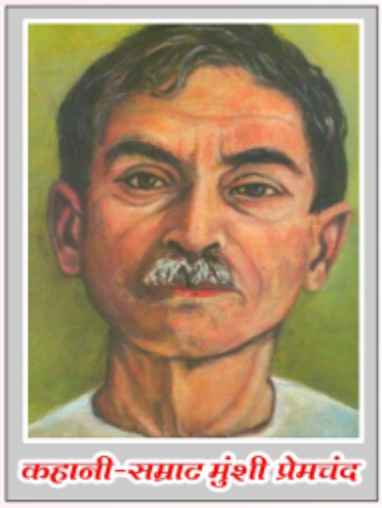

कहानी-सम्राट मुंशी प्रेमचंद

एक दिन कहानी-सम्राट मुंशी प्रेमचंद उनके प्रांत के गवर्नर सर हेली के पत्र को पढ़कर थोड़े-से चिंतित हो गये क्योंकि उसमें लिखा था कि 'आपकी बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए अंग्रेज सरकार आपको 'राय साहब' का खिताब देना चाहती है।'

उनकी पत्नी को जब इस बात का पता चला तो वह खुशी के मारे फूली न समायी और हँसते हुए पूछा : ''खिताब के साथ कुछ और भी देंगे ?''

मुंशी प्रेमचंद ने बुझी हुई आवाज में कहा : ''हाँ।''

''तो आप इतने दुःखी और परेशान क्यों हैं ?''

''मैं यह सम्मान स्वीकार नहीं कर सकता।''

पत्नी ने आश्चर्य से पूछा : ''क्यों ?''

''अब तक मैंने जनता के लिए लिखा है लेकिन 'राय साहब' बनने के बाद मुझे अंग्रेज सरकार के लिए लिखना पड़ेगा। मेरी कलम स्वतंत्र रूप से चलती है, किसीके दबाव में नहीं। कलम को किसी भी कीमत में बेचना मुझे स्वीकार नहीं है।'' इसके बाद उन्होंने संदेश भिजवाया कि 'मैं जनता की रायसाहबी तो ले सकता हूँ लेकिन अंग्रेज सरकार की नहीं।'

प्रेमचंद का उत्तर पढ़कर गवर्नर स्तब्ध रह गया। बाद में जब प्रेमचंद उससे किसी आयोजन में मिले तो गवर्नर हेली ने सर झुकाकर उनके स्वाभिमान का सम्मान किया।

धन्य हैं मुंशी प्रेमचंद, पंडित मदनमोहन मालवीय, योगी अरविंद जैसे भारत के सच्चे लेखक, पत्रकार जिन्होंने समाज के समक्ष केवल सच्चाई उजागर करने के लिए, समाज के हित में ही अपनी कलम चलायी, उसे कदापि बेचा नहीं। यह वास्तविकता है कि पत्रकारिता में वे लोग ही चिरकाल तक आदरणीय व स्मरणीय रहते हैं, जो अपना ईमान कभी नहीं बेचते। धिक्कार है उनको, जो निर्दोष संतों पर लांछन लगाते हैं !

ज्ञानवर्धक पहेलियाँ

(१)प्रातः में जिसका दर्शन,स्वर्णदान के समान।
श्रीहरि को है अति प्यारी, औषधियों की खान॥

(२) 'चल माई !' कह चलाई रेल,
ध्यान लग जाता खेलते खेल।
बोलो कौन वे संत सुजान,
ईश्वर से अटूट था जिनका मेल॥

उत्तर : (१) तुलसी (२) संत श्री लीलाशाहजी महाराज

अमृत बिंदु

* एक गुण दूसरे गुण को ले आता है ऐसे ही एक अवगुण दूसरे अवगुण को ले आता है, अतः सजग रहें।

* जिसके जीवन में समय का मूल्य नहीं, कोई ऊँचा लक्ष्य नहीं वह बिना पतवार की नाव जैसा होता है। साधक एक-एक श्वास की कीमत समझता है। - पूज्य बापूजी

संत-सम्मेलन, अहमदाबाद

वे वेदों के सार, ईश्वर के अवतार, ज्ञान-भक्ति के भंडार हैं

- महामंडलेश्वर श्री परमात्मानंदजी

५५ साल से मैं कथा कह रहा हूँ, ऐरी-गैरी जगह नहीं झुकता हूँ। आप पूछेंगे कि 'क्या आप बापूजी के चरणों में झुके हैं ?'

तो मैं कहूँगा : 'हमने सिर झुकाया नहीं, सिर अपने-आप झुका है।'

'बापू' किसे कहते हैं ? पिता का भी पिता... जो सबका पिता है, परम पिता है उसे 'बापू' कहते हैं। हमारे बापू छोटी-मोटी हस्ती नहीं हैं; वे वेदों के सार हैं, ईश्वर के अवतार हैं, ज्ञान-भक्ति के भंडार हैं।

सुरेन्द्र पाल, 'महाभारत' के द्रोणाचार्य तथा 'देवों के देव महादेव' के प्रजापति दक्ष : हर इन्सान जो जीवन में निराश हो जाता है उसे बापूजी की जरूरत होती है। बापूजी उसको सही रास्ता दिखाते हैं, जीवन में आगे बढ़ने की राह बताते हैं, उसको फिर साहसी बनाते हैं।

बापूजी की अमृतवाणी सुनने से केवल भारतवासी ही धन्य नहीं हैं, पूरा विश्व धन्य है। **बापूजी के सामने मैं एक बहुत ही छोटा-सा इन्सान हूँ। बापूजी सूर्य के समान हैं और मैं उनके सामने एक छोटा-सा दीया हूँ।**

महामंडलेश्वर श्री प्रेमानंदजी, हरिद्वार : १९९२ के उज्जैन कुम्भ से बापूजी की ख्याति देश-विदेश में विशेष रूप से बढ़ती चली गयी। अभी उज्जैन का कुम्भ आ रहा है, फिर से वे पुराने दिन लौटेंगे और जितना प्रचार-प्रसार पहले हुआ है, उससे हजारों गुना ज्यादा संत आशारामजी बापू की उपस्थिति में होगा। बापू के माध्यम से फिर से हमारे सनातन धर्म की ध्वजा लहरायेगी।

संत श्री रामचैतन्य बापूजी, महामंत्री, अखिल भारतीय साधु समाज : बापूजी ने हमको बहुत प्यार दिया है, सभी संतों को प्यार देते हैं। जब भी हमारी जरूरत पड़ेगी, हम बापूजी के लिए खड़े हैं।

श्री शिवाभाई : पूज्य बापूजी ने हमें कठिन-से-कठिन परिस्थिति में सम रहना सिखाया है। केवल सिखाया ही नहीं बल्कि बापूजी ने खुद सम रहकर बताया है। जेल को भी बापूजी ने नंदनवन बना दिया। बापूजी वहाँ भी कुछ-न-कुछ सेवा करते रहते हैं तो हमको भी सेवा से पीछे नहीं हटना है।

मीडियावाले पूछ रहे थे कि ''आश्चर्य है ! इतना होने के बावजूद भी पूरे भारत में आपके संत-सम्मेलन चल रहे हैं, प्रभातफेरियाँ चल रही हैं, साधकों की श्रद्धा में कहीं कमी नहीं आ रही है, इसका क्या कारण है ?''

मैंने कहा : ''बापूजी पूरी तरह से निर्दोष हैं यह बात बापूजी का हर साधक व देश का हर जागरूक नागरिक भलीभाँति जानता है। बापूजी के साधकों की श्रद्धा कभी हिलनेवाली नहीं है।''

पंडित गुरुजी, भागवत कथाकार : एक अकेले आशारामजी बापू ने १० करोड़ लोगों का संसार फलता-फूलता बनाया है। लाखों लोगों का चरित्र महान बनानेवाले, करोड़ों लोगों को मार्गदर्शन करनेवाले बापूजी पर जो कीचड़ उछालेगा, वह खुद ही निश्चित रूप से चरित्रहीन होगा । हम सब संत आशारामजी बापू के पीछे अभी भी खड़े हैं और खड़े रहेंगे।

श्री राजेन्द्रस्वरूपजी, श्रीराम कथाकार : बापूजीरूपी गंगा में पता नहीं कितने पुरुष, कितने जीवात्मा स्नान करके तर गये। और आगे भारत के सवा सौ करोड़ लोग इस गंगा में स्नान करेंगे, धरती के विभिन्न देशों में रहनेवाले लोग इस गंगा में स्नान करेंगे, स्वर्गादि में रहनेवाले देवता इस गंगा में स्नान करेंगे और एक बार पुनः यह धरती सतयुग को स्पर्श करेगी।

महामंडलेश्वर स्वामी श्री केशवानंदजी, सनातन सेवा मंडल, द्वारका (गुज.) : हिन्दुस्तान में हम हिन्दुओं को कमजोर करने के लिए सदा से ही संतों को बदनाम करने का षड्यंत्र होता आया है। परंतु किसी भी षड्यंत्र को भक्तों ने सफल नहीं होने दिया है और इस बार भी नहीं होने देंगे। संत आशारामजी बापू निर्दोष हैं ! निर्दोष हैं !! निर्दोष हैं !!!

हरि भक्त परायण श्री योगेशजी महाराज, अंतर्राष्ट्रीय कीर्तनकार : हमारे बापूजी संतों के भी संत, संतशिरोमणि हैं। आज जो हमारे हिन्दू संतों पर प्रहार कर रहे हैं, उन्हें हमारा धर्म दंड देगा।

आचार्य श्री विकासजी, संस्कृत भाषा के विद्वान व भागवताचार्य, हिमाचल प्रदेश : हमारे बापूजी कैसे हैं ? निरपेक्ष हैं, कोई अपेक्षा नहीं है। मननशील और शांत हैं। इतना षड्यंत्र, कुप्रचार हो रहा है, इतना दुर्व्यवहार किया जा रहा है लेकिन बापूजी को किसीसे वैर नहीं है। वैररहित हैं, सबमें अपना ही दर्शन करते हैं, समदर्शन करते हैं, प्रसन्न रहते हैं। मेरा विश्वास है कि जल्दी ही बापूजी हमारे बीच में होंगे।

महंत श्री विनोद कुमारजी, संत केशवदास दरबार (अहमदाबाद) : दुःख की बात है कि जो देश की राष्ट्रीय अखंडता को खंड-खंड करते हैं, दोषी साबित हो चुके हैं, उनको बार-बार पेरोल पर छुट्टी दी जाती है। जो हमारी राष्ट्रीय अखंडता को खंड-खंड करने के लिए कहता है : 'मुझे गिरफ्तार करके तो दिखाओ ! मैं बैठा हूँ, किसकी हिम्मत है ?' उनके लिए कोर्ट के ऑर्डर-पर-ऑर्डर निकलते हैं लेकिन गिरफ्तार नहीं किया जाता। और हमारे बापूजी को, एक निरपराध, निर्दोष संत को जेल में डाल दिया जाता है। यह कहाँ का न्याय है ? हम हिन्दुओं को संगठित होकर आवाज उठानी होगी।

साध्वी कात्यायनीजी, श्रीराम कथाकार, 'कात्यायनी देवी संस्थान', मुंबई : बापूजी ने सत्य पर अपना जीवन लगा दिया और यह अवश्य होगा कि वे जल्द-से-जल्द हमारे बीच आयेंगे।

श्री चंदनजी महाराज, अध्यक्ष, बाँके बिहारी कला संस्थान, वृंदावन : निश्चित रूप से बापूजी महापुरुष हैं और ऐसे महापुरुष यदा-कदा इस भूमि पर जनकल्याण के लिए आते हैं। बापूजी निरपराध हैं, उनका कोई भी दोष नहीं है फिर भी उनके ऊपर दोष लगाये गये हैं।

समाज बापूजी का युगों-युगों तक ऋणी रहेगा

- अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त जादूगर आँचल, उदयपुर (राज.)

मैं बहुत सौभाग्यशाली हूँ कि बापूजी की मेरे ऊपर असीम कृपा रही है। बापूजी से प्राप्त सारस्वत्य मंत्र और गुरुमंत्र का ही प्रभाव है कि सालभर में लगातार १० महीने मेरे शो रहने के बावजूद मैं पढ़ाई के क्षेत्र में हमेशा अव्वल रही हूँ।

मैं उदयपुर, राजस्थान की हूँ। उदयपुर के आसपास के कई आदिवासी क्षेत्रों में आदिवासी लोगों को प्रलोभन देकर कई मिशनरियाँ उनका धर्म-परिवर्तन कराने का घिनौना कार्य कर रही हैं। और ऐसे कार्य देश के कई क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर होते आ रहे हैं। बापूजी ने अपने सत्संग, यज्ञ, हवन आदि के द्वारा उन लोगों को, जिनका धर्म-परिवर्तन किया गया था, उन्हें अपने धर्म में वापस लाने का पावन कार्य किया है। इसीलिए ऐसी मिशनरियों के लिए काँटा बन चुके बापूजी को एक खतरनाक षड्यंत्र के तहत फँसाया गया है। हम सब मिलकर बापूजी के खिलाफ चल रहे षड्यंत्र का विरोध करेंगे।

बापूजी ने वर्षों से अपने सत्संग व सत्साहित्य के द्वारा करोड़ों लोगों का उद्धार किया है, करोड़ों लोगों ने बापूजी के सान्निध्य में आकर अपने व्यसन छोड़े हैं, अपने जीवन का परिवर्तन किया है। समाज पूज्य बापूजी का युगों-युगों तक ऋणी रहेगा।

आचार्य सुमित कृष्णजी, भागवत कथाकार, जम्मू : एक अंतर्राष्ट्रीय साजिश के तहत बापूजी को बदनाम करने के कुप्रयास किये जा रहे हैं। सनातन धर्म के विरोधी शायद आश्वस्त थे कि वे सनातन धर्म की जड़ें खोखली कर देंगे लेकिन भगवान का वचन है : **यदा यदा हि धर्मस्य...**

जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब धर्म की रक्षा के लिए भगवान स्वयं अवतार लेते हैं। और बापूजी के रूप में साक्षात् भगवान ने ही अवतार लिया तथा निःस्वार्थ भाव से माँ भारती की सेवा में लग गये। बापूजी ने जितनी सारी सेवाएँ की हैं, अगर कोई व्यक्ति उनको गिनने में अपनी पूरी जिंदगी लगा दे तो भी सारी सेवाओं को वह कभी गिन नहीं पायेगा। उन सेवाओं का वर्णन करना तो सूर्य को दीया दिखाने के बराबर है।

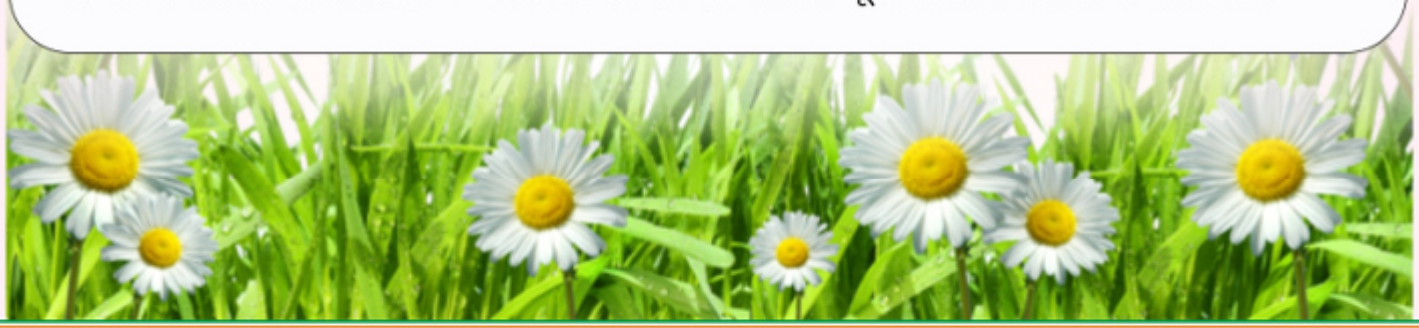

संत-सम्मेलन, सूरत

श्री धनंजय देसाई, राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू राष्ट्र सेना : सब लोग कहते हैं बापू निर्दोष हैं... कैसे निर्दोष हैं ? जहाँ अनाचार, दुराचार, अंधकार की पूजा होनी चाहिए थी वहाँ बापू ने प्रकाश की पूजा सिखायी। जहाँ कायरता की पूजा होनी चाहिए, वहाँ बापू ने हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - चारों पुरुषार्थों से भरपूर किया। माँ के गर्भ में अच्छे संस्कारों को सींचना सिखाया ताकि उस गर्भ से योगी, तपस्वी, राष्ट्रपुरुष जन्म लें। ये बापू के सबसे बड़े दोष हैं !

'हिन्दू राष्ट्र सेना' यह वचन देती है कि जब तक बापू बाहर नहीं आयेंगे, तब तक हम सत्य के लिए संघर्ष करते रहेंगे।

कबीरपंथी स्वामी मार्ग्यस्मितजी, विश्वमंगल आश्रम : संत आशारामजी बापू ने हिन्दू प्रजा को ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग बताया। अरे, मंत्रदीक्षा देकर अमरता के द्वार खोल दिये।

भागवताचार्य श्री खगेन्द्रजी महाराज, शहादा (महाराष्ट्र) : हमारे माँ-बाप, गुरु इन सबका एकत्रीकरण जिनमें है, वे हमारे बापू हैं।

अक्षर किसीको लगता है कि 'आकाश में तलवार घुमाकर मैं सूरज के टुकड़े कर दूँगा' तो यह पागलपन है। बापू आकाश के सूरज हैं, तेरा तलवार घुमाना ही व्यर्थ है।

फिरोज खान, 'महाभारत' धारावाहिक के अर्जुन : गुरुजी ! आप आज चाहे कहीं भी हों, आप सदैव हमारे हृदय में रहेंगे और जब तक हम जीवित रहेंगे आपके ही नाम से जियेंगे।

साध्वी सरस्वतीजी, भागवत कथाकार : इस देश के मीडिया ने शिवाभाई पर कैसे-कैसे जुल्म किये ! मीडिया शिवाभाई की पत्नी व बच्चों को दिखाता है। वह महिला कह रही है कि बापूजी ने मेरे पति पर काला जादू किया है, जबकि सच्चाई यह है कि शिवाभाई की आज तक शादी ही नहीं हुई तो पत्नी और बच्चे कहाँ से आ गये ?

चाहे शिल्पीजी हों या शिवाभाई हों या कोई भी हो, उन्हें कॉल डिटेल्स के माध्यम से फँसाया गया। इसमें कहा गया कि '९ से १७ अगस्त के बीच इन्होंने मिलकर साजिश की' परंतु उस बीच में इन्होंने आपस में बात ही नहीं की। अगर किसीको कॉल-डिटेल्स चाहिए तो शिवाभाई के पास हैं।

षड्यंत्र करके एक निर्दोष संत और उनके साधकों के साथ अन्याय करना अत्यंत निंदनीय है।

दीपक चौरसिया को मिली सबसे बेकार पत्रकार की उपाधि

मीडिया क्रूक्स (Mediacrooks.com) नामक वेबसाइट द्वारा 'भारत का सबसे खराब पत्रकार २०१४' की उपाधि देने के लिए किये गये सर्वेक्षण में देश के कई जागरूक लोगों ने भाग लिया। सर्वे के बाद जारी की गयी बेकार पत्रकारों की सूची में दीपक चौरसिया का नाम अव्वल स्थान पर रहा।

Mediacrooks.com ने कहा है कि ''दीपक चौरसिया जो कि आजकल इंडिया न्यूज चैनल के लिए काम करता है, एक फर्जी विडियो बनाने के कारण काफी चर्चा में है। इस पर आरोप है कि इसने एक फर्जी विडियो बना के उसे अपने चैनल पर दिखाकर किसीकी (संत श्री आशारामजी बापू की) छवि को धूमिल किया है।

एक छोटी बच्ची के यौन-उत्पीड़न के मामले में लोगों ने ट्विटर पर #ArrestCHORasia इस विषय को अनेकों बार ट्वीट किया था, जिससे यह विषय भारत की टॉप ट्रेंडिंग में देखा गया। २००३ के अमेरिका-ईराक युद्ध में दीपक चौरसिया रिपोर्टिंग करने गया था । देखा गया कि दीपक चौरसिया गहमागहमी के बीच फ्लैप जैकेट, हेलमेट आदि (युद्ध में उपयोग आनेवाली बचाव- सामग्री) पहनकर युद्ध के बारे में खबरें दे रहा था। बस फर्क इतना था कि वह ईराक से नहीं कुवैत से रिर्पोटिंग कर रहा था, जहाँ युद्ध जैसी कोई स्थिति ही नहीं थी ! शायद इस हास्य-कलाकार को न्यूज व्यापार भी एक रंगमंच जैसा लगता है। दीपक चौरसिया स्पष्ट तौर से टीवी पत्रकारिता के लिए नितांत अयोग्य है। अगर वह इस कचरे के ढेर के ऊपर विराजमान है तो वह यह सम्मान (देश का सबसे बेकार पत्रकार) पाने का पूर्ण हकदार है।''

'अच्छा होता अगर तू भी सोया ही रहता'

स्वामी सेवानंदजी के दो शिष्य थे - रामानंद और चेतनानंद। ब्राह्ममुहूर्त में उठकर जप-ध्यान, संध्या, शास्त्राध्ययन करना उनका नित्य-नियम था। उनकी तत्परता देख स्वामीजी दोनों शिष्यों से संतुष्ट रहते थे। एक दिन रामानंद देर तक सोया रहा। चेतनानंद ब्राह्ममुहूर्त में उठकर अपना नित्य-नियम पूरा करके सेवा में लग गया। दूसरे दिन भी रामानंद ब्राह्ममुहूर्त के समय सोता हुआ मिला। इस प्रकार लगातार ३-४ दिन बीत गये। आखिर चेतनानंद गुरुजी के पास पहुँचा और शिकायत करते हुए बोला : ''गुरुदेव ! रामानंद आजकल प्रातः ईश्वरोपासना करता ही नहीं है। वह तो सोया ही रहता है।''

गुरुजी बोले : ''अच्छा होता अगर तू भी सोया ही रहता।''

चेतनानंद स्वामीजी की यह बात सुनकर सकपका गया। वह तो सोच रहा था कि गुरुजी उससे प्रसन्न होंगे, शाबाशी देंगे लेकिन यह क्या, गुरुजी तो नाराज हो गये ! उसने साहस करते हुए फिर से कहा : ''गुरुदेव ! मैं अपने बारे में नहीं, रामानंद के बारे में बात कर रहा हूँ। वह देर तक सोता रहता है, उसके बारे में क्या करना चाहिए ?''

गुरुजी : ''मैं रामानंद के बारे में चिंतित नहीं हूँ। मैं तुम्हारे बारे में चिंतित हूँ। मैं कहता हूँ कि तुम भी यदि सोये रहो तो अच्छा ही होगा।''

''ऐसा क्यों गुरुजी ? मेरे सोने से किसको लाभ होगा ?''

''तुमको ही लाभ होगा। तुम परनिंदा और राग-द्वेष से बचे रहोगे।''

तब चेतनानंद ने तुरंत अपनी सफाई में कहा : ''मैं निंदा नहीं कर रहा हूँ गुरुजी ! रामानंद सचमुच में ४ दिन से देर तक सोता रहता है। मुझे उसके प्रति द्वेष नहीं है, तभी तो मैं उसकी गलती गुरुजी को बता रहा हूँ जिससे वह सुधर जाय !''

''बेटा ! क्या तुमने ४ दिनों में यह जानने की कोशिश की कि रामानंद क्यों देर तक सोता रहता है ? क्या तुमको पता है कि उसे बुखार है ? वह सोया रहता है, ईश्वरोपासना नहीं कर पाता लेकिन किसीकी निंदा भी तो नहीं करता ! परनिंदा, परदोष-दर्शन से तो वह बचा हुआ है ! तुम तो परनिंदा के भागी बन रहे हो। तुम्हारा कर्तव्य था कि पहले उससे देर तक सोने का कारण पूछते। यदि वह गलत रास्ते जा रहा है तो उसे समझाते। अगर वह फिर भी नहीं मानता तब यह बात उसके सामने मुझसे बोलनी चाहिए थी। तुमने तो ऐसा किया नहीं।''

चेतनानंद ने गुरुजी की कल्याणकारी बात को सकारात्मक भाव से लिया। उसे अपने मन में छिपी खुद को अच्छा दिखाने की वासना और गुरुभाई के प्रति द्वेष की सूक्ष्म भावना दिखने लगी। उसने गुरुदेव से हृदयपूर्वक क्षमा माँगी और रामानंद के सामने भी अपना हृदय निष्कपटतापूर्वक खोलकर रख दिया।

(शेष पृष्ठ १७ पर)

वे ही लोग अपने जीवन में सफल हो पाये हैं जिन्होंने दृढ़ता व साहस से परिस्थितियों का सामना किया है। वे लोग अक्सर बाजी हार जाते हैं जिनके पास प्रतिकूलताओं का सामना करने की हिम्मत नहीं होती है। कुआँ या बावली की दीवार पर उगे हुए पीपल या वट के पौधे को देखो। किसी पहाड़ की चट्टान पर खड़े वृक्ष को देखो। न तो उनके पास पर्याप्त मिट्टी होती है, न ही जड़ फैलाने के लिए पर्याप्त स्थान। फिर भी उनकी जड़ें टेढ़ी-मेढ़ी होकर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने लिए मिट्टी, जल, प्रकाश, वायु आदि का प्रबंध कर लेती हैं, जिससे वे विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेते हैं। मानव-तन के जर्रे-जर्रे में पुरुषार्थ भरा हुआ है लेकिन दूसरों का सहारा लेने के संस्कार ऐसे पड़ गये हैं कि चाहकर भी वह अपनी हस्ती को नहीं पहचान रहा है।

मनुष्य में इतना सामर्थ्य छुपा है कि वह जो चाहे सो कर सकता है लेकिन आलस्य ने उसके मन, बुद्धि और शरीर तीनों ही को इतना दुर्बल बना दिया है कि उसकी सारी शक्तियाँ पंगु हो गयी हैं। आलस्य या परावलम्बी होना एक प्रकार का अंधकार है जो आत्मा पर, शक्तियों पर तथा मनुष्य की भावी उन्नति एवं प्रगति पर तुषारापात कर देता है। फिर उस मनुष्य के लिए किसी भी प्रकार की उत्कृष्टता प्राप्त करना कठिन है। याद रखो, कीर्ति, लक्ष्मी और जीवन में सफलता स्वाश्रयी के अधीन है। जो अपना काम स्वयं करता है, सजगता से लगन व उद्योग के साथ करता है वही सुख-शांतिमय, सम एवं प्रसन्न जीवन प्राप्त करेगा।

ईश्वर सदैव तुम्हारी सहायता करने के लिए तैयार है लेकिन तुम उठकर दो कदम चलो तो सही ! फिर पथ भले ही साधना का हो या अन्य कोई भी। इरादा दृढ़ है तो मंजिल मिलकर ही रहेगी। हजार-हजार बार असफल होने पर भी एक कदम और उस राह में उठाओ... इससे संसारी सफलता तो मिलती

है लेकिन शाश्वत सफलता परमात्मप्राप्ति की इच्छा करनेमात्र से मिलती है। परमात्मा उसे खूब मदद करते हैं।

उठो वीर ! उठो... शाबाश !! कमर कसकर चल पड़ो। आरम्भ में पथ पथरीला है और तुम्हें खुले पैर पैदल ही जाना होगा लेकिन आगे सफलतारूपी देवी तुम्हारे मार्ग को फूलों से सजाने के लिए खड़ी है, जो तुम्हें मंजिल तक पहुँचाकर ही रहेगी।

चरैवेति... चरैवेति... प्रचलां निरन्तरम्।
उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्॥

'उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम - ये छः गुण जिस व्यक्ति के जीवन में हैं, अंतर्यामी देव (परब्रह्म परमात्मा) उसकी पग-पग पर सहायता करते हैं।'

ये सद्गुण साधारण मनुष्य को भी महान बनाते हैं।

तूफान और आँधी, हमको न रोक पाये।
वे और थे मुसाफिर जो पथ से लौट आये॥

ये गुलाबजामुन कोई छीन न ले !

एक बच्चे से उसकी माँ ने पूछा : ''बेटा ! तेरे पास ५ गुलाबजामुन हैं, एक मैं खा लूँ तो कितने बचेंगे ?''

लड़का : ''४ बचेंगे।''

माँ : ''अगर २ खा लूँ तो ?''

लड़के ने थोड़ा रुककर गम्भीरता से कहा : ''५ बचेंगे।''

''वह कैसे ?'' माँ ने आश्चर्य से पूछा।

''तुम उठाओगी उससे पहले तो मैं पाँचों खा जाऊँगा !''

तब माँ ने कहा : ''बेटा ! जैसी सँभाल तू गुलाबजामुन की करता है, ऐसे ही तेरा एक भी सद्गुण कोई छीन न ले इसकी भी सावधानी रखता है क्या ?''

बेटे ने विस्मय से पूछा : ''माँ ! कोई सद्गुण कैसे छीन लेगा ?''

माँ ने उसे गोद में लेकर समझाया : ''बेटा !

कुसंग, लापरवाही और अपनी बुरी आदतें ही हमारे सद्गुणों पर डाका डालती हैं। ध्यान रखना, आलस्य तुम्हारी तत्परता न छीन ले, चटोरेपन की आदत तुम्हारा स्वास्थ्य न छीन ले। फूहड़ टीवी धारावाहिक और फिल्में देखने का मोह तुम्हारा चरित्र न छीन ले। लोभ व लालच तुम्हारी ईमानदारी न छीन लें। परदोष-दर्शन और दूसरों की निंदा करने की आदत तुम्हारी शांति न छीन ले। इन सब बातों की भी सावधानी रखना।

बेटा ! शक्कर के बने गुलाबजामुन से तो थोड़ा-सा मीठा रस मिलता है पर जो व्यक्ति सद्गुणरूपी गुलाबजामुनों की सँभाल करता है उसका तो सारा जीवन ही रसमय हो जाता है और ऐसा व्यक्ति सबका प्रिय बन जाता है।''

पुण्यसलिला माँ गंगा

(श्री गंगा जयंती : ६ मई)

'नारद पुराण' के अनुसार कलियुग में गंगाजी की विशेष महिमा है । कलियुग में सब तीर्थ स्वभावतः अपनी-अपनी शक्तियों को गंगाजी में छोड़ते हैं परंतु गंगाजी अपनी शक्ति को कहीं नहीं छोड़तीं । गंगाजी पातकों के कारण नरक में गिरनेवाले नराधम, पापियों को भी तार देती हैं।

कोई व्यक्ति कहीं अज्ञात स्थान में मर गये हों और उनके लिए शास्त्रीय विधि से तर्पण नहीं किया गया हो तो ऐसे लोगों की हड्डियाँ यदि गंगाजी के जल में प्रवाहित करते हैं तो उनको परलोक में उत्तम फल की प्राप्ति होती है । बासी जल और बासी दल त्याग देने योग्य माना गया है परंतु गंगाजल और तुलसीदल बासी होने पर भी त्याज्य नहीं हैं।

इस लोक में गंगाजी की सेवा (प्रदूषण मुक्त करने आदि) में तत्पर रहनेवाले मनुष्य को आधे दिन की सेवा से जो फल प्राप्त होता है वह सैकड़ों यज्ञों द्वारा भी नहीं मिल सकता।

(नारद पुराण)

गंगाजी की महिमा बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जैसे मंत्रों में ॐकार, स्त्रियों में गौरीदेवी, तत्त्वों में गुरु-तत्त्व और विद्याओं में आत्मविद्या उत्तम है, उसी प्रकार सम्पूर्ण तीर्थों में गंगातीर्थ विशेष माना गया है।''

गंगाजी की वंदना करते हुए कहा गया है :

संसारविषनाशिन्यै जीवनायै नमोऽस्तु ते ।
तापत्रितयसंहन्त्र्यै प्राणेश्यै ते नमो नमः ॥

'देवी गंगे ! आप संसाररूपी विष का नाश करनेवाली हैं । आप जीवनरूपा हैं । आप आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीनों प्रकार के तापों का संहार करनेवाली तथा प्राणों की स्वामिनी हैं। आपको बार-बार नमस्कार है।'

(स्कंद पुराण, काशी खंड, पूर्व भाग : २७.१६०)

पूज्य बापूजी पिछले अनेक वर्षों से गंगाजी की महिमा बताकर लोगों को गंगाजी में गंदगी न डालने का आह्वान करते आये हैं । आपश्री स्वयं माँ गंगा के अमृतमय जल का उपयोग करते हैं । बापूजी के करोड़ों शिष्य भी माँ गंगा का आदर-पूजन-रक्षण करने-कराने में भागीदार होते हैं।

यहाँ मिलती हैं विद्यार्थियों को तीनों विद्याएँ

गर्मियों की छुट्टियों में आयोजित होनेवाले 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' में विद्यार्थियों को पूज्य बापूजी के सत्संग से दुर्लभ आत्मविद्या का श्रवण-मनन करने का सुअवसर मिलता है। शिविर के दौरान विद्यार्थियों की आंतरिक शक्तियों को विकसित करनेवाली योगविद्या के साथ ही ऐहिक विद्या में सफलता प्राप्त करने की कुंजियाँ भी सिखायी जाती हैं।

सालभर में विद्यार्थी दिन-रात एक कर मेहनत करके भी वह सफलता नहीं प्राप्त कर पाता जो सप्ताह में केवल एक दिन 'बाल संस्कार केन्द्र' में जाने से, वर्षभर में १-२ विद्यार्थी उत्थान शिविरों में भाग लेने से और वहाँ बताये गये सरल प्रयोगों एवं युक्तियों को जीवन में अपनाने से सहज में वह पा लेता है, ऐसा लाखों विद्यार्थियों का अनुभव है। वहाँ प्राप्त होनेवाली योगविद्या व आत्मविद्या के प्रभाव से उसके जीवन में सर्वांगीण उन्नति होने लगती है, फिर लौकिक विद्या में सफल होना तो उसके बायें हाथ का खेल हो जाता है।

अतः आप भी अपने बच्चों को इन 'बाल संस्कार केन्द्रों' व शिविरों का लाभ लेने के लिए प्रेरित करें और उनका भविष्य उज्ज्वल बनाने का मार्ग प्रशस्त करें।

टिप्पणी : अप्रैल, मई व जून की ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में विभिन्न संत श्री आशारामजी आश्रमों में 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' का आयोजन किया जानेवाला है। प्रवेश हेतु नजदीकी आश्रम में सम्पर्क करें।

(पृष्ठ १३ का शेष)

इससे **दोनों गुरुभाइयों में पहले से भी ज्यादा स्नेह बढ़ गया और उनके आपसी स्नेह और समझदारी की वजह से उन्हें गुरुदेव की प्रसन्नता भी प्राप्त हुई।** जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति बदलते हैं फिर भी जो अबदल है, उस आत्मा में 'मैं' पने की मधुरता जगी। जीवन्मुक्त महापुरुष की कृपा से शिष्य भी परम वैभव परमात्म-साक्षात्कार को प्राप्त हो गये। धन्य हैं ऐसे सत्शिष्य जो सद्गुरुओं की अनुभूति को अपनी अनुभूति बना लेते हैं!

उच्च न्यायालय ने माँगा सूरत पुलिस से जवाब

राजस्थान पत्रिका, अहमदाबाद। सूरत पुलिस द्वारा अहमदाबाद आश्रम के एक साधक को बिना किसी कारण के गैर-कानूनी ढंग से बहुत ज्यादा प्रताड़ित किया गया था। उस साधक ने इस बात की फरियाद गुजरात उच्च न्यायालय में की थी। इस याचिका के मद्देनजर उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार, सूरत पुलिस आयुक्त राकेश अस्थाना, उपायुक्त शोभा भूतड़ा, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त हरेश दूधात व मुकेश पटेल तथा राज्य मानवाधिकार आयोग (एसएचआरसी) को नोटिस जारी कर जवाब माँगा है।

याचिका में कहा गया है कि 'पुलिस ने अमानवीय तरीके से चार-पाँच दिनों तक साधक को अपनी हिरासत में रखा और शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित किया। इसलिए इस मामले में उस साधक को मुआवजा दिया जाय।'

इस संबंध में याचिकाकर्ता ने राज्य मानवाधिकार आयोग को भी पत्र लिखा था। आयोग ने अहमदाबाद व सूरत पुलिस आयुक्त से कार्यवाही की रिपोर्ट भी मँगवायी थी।

विद्यार्थी प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : ऐसा कौन-सा धन है जो कोई छीन नहीं सकता और बाँटने से बढ़ता है ?

उत्तर : विद्या।

प्रश्न : विद्या कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर : विद्या तीन प्रकार की होती है। एक होती है ऐहिक विद्या या लौकिक विद्या, जो व्यवहार व आजीविका चलाने के लिए सीखी जाती है। दूसरी है योगविद्या। यह हमारी सुषुप्त दिव्य शक्तियों को जागृत करती है एवं भीतरी सामर्थ्य को बढ़ाती है, इसलिए यह ऐहिक विद्या से श्रेष्ठ है। तीसरी है आत्मविद्या या ब्रह्मविद्या। यह सर्वश्रेष्ठ विद्या है। इसीके संदर्भ में शास्त्रवचन है : **सा विद्या या विमुक्तये।** 'वास्तविक विद्या वही है जो मुक्त कर दे।'

पुण्यदायी तिथियाँ

७ मई : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से रात्रि९-५६)

१० मई : मोहिनी एकादशी (अनेक जन्मों के किये हुए मेरु पर्वत जैसे महापाप भी नष्ट करनेवाला व्रत)

१५ मई : देवर्षि नारद जयंती, विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-३५ तक) (जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल लाख गुना है। - पद्म पुराण)

२१ मई : बुधवारी अष्टमी (सुबह ७-३५ से २२ मई प्रातः ५-२९ तक)

२४ मई : अपरा एकादशी (महापुण्यप्रद और महापातकों की नाशक)

१ जून : रविपुष्यामृत योग (रात्रि १-५९ से २ जून सूर्योदय तक)

गर्मियों में अत्यंत लाभकारी : खीरा

बालं सुनीलं त्रपुसं तेषां पित्तहरं स्मृतयम्।

– आचार्य सुश्रुत

कोमल खीरा विशेष रूप से गुणकारी एवं पित्त हरनेवाला है।

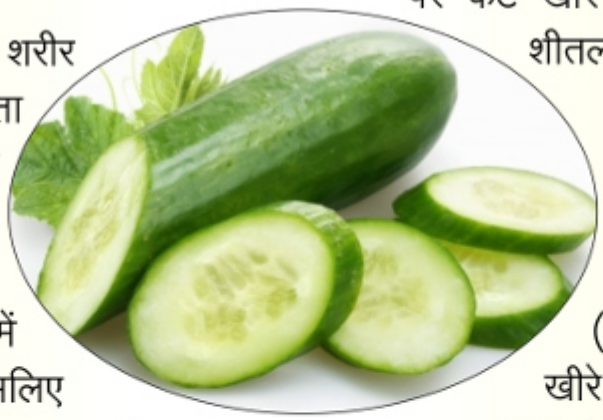

खीरे के नियमित सेवन से शरीर की आंतरिक और बाह्य शुष्कता तथा गर्मी दूर होती है। त्वचा अधिक स्निग्ध और कोमल होती है तथा चेहरे का सौंदर्य विकसित होता है। खीरे में विटामिन 'ई' भी होता है, इसलिए यह प्रजनन शक्ति बढ़ाने में भी लाभप्रद है। इसमें फॉस्फोरस विशेष रूप से पाया जाता है इसलिए मानसिक कार्य करनेवाले बड़ों एवं बच्चों के लिए खीरे का सेवन गुणकारी है। पुराना खीरा पचने में भारी व वायुवर्धक होता है।

खीरा मूत्रसंबंधी विकार जैसे - मूत्रावरोध, पथरी, सूजन, गुर्दे की सूजन (नेफ्राइटिस), बस्ति एवं नलिकाशोथ, मूत्ररक्तता, मूत्राघात एवं मूत्रदाह में लाभकारी है।

खीरा उदर-विकार, यकृत-विकार, पांडुरोग (रक्ताल्पता), पीलिया, नेत्रदाह में उत्तम सेवनीय एवं औषधरूप में उपयोग करने योग्य है। ग्रीष्म ऋतु की झुलसानेवाली गर्मी में त्वचा एवं आँखों पर कटे खीरे के टुकड़े रखने से अत्यंत शीतलता का अनुभव होता है।

औषधीय प्रयोग :

(१) उच्च रक्तचाप में खीरे के रस का सेवन अत्यंत हितकारी है।

(२) पथरी के रोग में २५० ग्राम खीरे का रस सुबह-शाम लें।

(३) ग्रीष्म ऋतु में त्वचा की सुंदरता के लिए नींबू के रस की कुछ बूँदें १ चम्मच खीरे के रस में डालकर मालिश करें एवं २० से २५ मिनट बाद चेहरे को स्वच्छ पानी से धो डालें। नियमित प्रयोग से सौंदर्य निखरता है।

(४) खीरे का १०० ग्राम रस प्रतिदिन पीने से चेहरा खिल उठता है।

(५) गर्मी व धूप से आँखें लाल हो गयी हों, जलन हो रही हो अथवा रात्रि-जागरण से आँखों में थकावट हो तो खीरे का गूदा आँखों पर रखने से आराम होता है।

सफलता का महामंत्र

विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन बचपन में पढ़ने में कमजोर थे। उनकी इस कमजोरी का उनके साथी मजाक उड़ाया करते थे। एक दिन उन्होंने अध्यापक से गम्भीरतापूर्वक पूछा : ''क्या मैं किसी प्रकार महान बन सकता हूँ ?''

अध्यापक : ''रुचि, लगन और एकाग्रता से निरंतर अभ्यास द्वारा कोई भी आदमी महान बन सकता है।''

यह शिक्षा मानो आइंस्टीन के लिए महामंत्र थी। उन्होंने इसे मन में बैठाया और दृढ़ संकल्प के साथ अध्ययन में जुट गये। रुचि और लगन के साथ एकाग्रता का धन कमाने के लिए आइंस्टीन ने भारतीय योग-पद्धति का आश्रय लिया और पूरा विश्व जानता है कि उन्होंने 'अणु विज्ञान के पुरोधा' और 'सापेक्षवाद के जनक' के रूप में ख्याति प्राप्त की।

यदि आइंस्टीन जैसे जिज्ञासु व प्रयत्नशील विद्यार्थी को किन्हीं ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु का मार्गदर्शन व दीक्षा-शिक्षा मिलती तो ऐसा व्यक्ति आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके सर्व से ऊँचा आत्मपद पाकर मुक्तात्मा, ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मस्वरूप हो सकता था।

अतः विद्यार्थियों को अध्ययनकाल में आत्मज्ञानी महापुरुषों की शिक्षा-दीक्षा का लाभ अवश्य लेना चाहिए। उनके बताये एकाग्रता, लगन, उत्साह एवं कार्य में रुचि बढ़ाने के प्रयोगों का लाभ लेकर अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करना चाहिए। इससे विद्यार्थी व्यवहार-जगत एवं दिव्य आत्मिक अनुभव दोनों क्षेत्रों में बाजी मार लेगा।

आदर्श बालक की पहचान

आदर्श बालक की पहचान,
हो उद्यमी साहसी, धैर्यवान,
एकाग्रचित हो शांत, बुद्धिमान,
निश्चल निर्भय हो, चरित्रवान।

ब्राह्ममुहूर्त में नित जग जाये,
ईश विनय कर शीश झुकाये,
रगड़ रगड़ कर नित्य नहाये,
प्रसन्नता का पाये वरदान।

सूर्य तुलसी को नित जल चढ़ाये,
ओज-तेज, बुद्धिबल पाये,
तन तंदुरुस्त, शांति पाये,
पढ़ लिखकर बने गुणवान।

गुरु मात-पिता का आज्ञाकारी,
स्वाध्यायी, संयमी हो संस्कारी,

दंड से नहीं, कर्तव्यहीनता से डरो

एक बालक का विद्यालय जाने से पहले अपनी माँ के चरणस्पर्श करने का नियम था । एक दिन जल्दी-जल्दी में वह माँ के चरणस्पर्श किये बिना ही विद्यालय के लिए निकल गया । रास्ते में उसे अचानक स्मरण हुआ कि 'आज तो मैं माँ के चरणस्पर्श करना भूल गया !' पलभर भी बिना कुछ सोचे-विचारे वह अपनी भूल सुधारने के लिए घर की ओर लौटने लगा।

उसके मित्रों ने उसकी हँसी उड़ायी और बोले : ''अरे ! एक दिन माँ के पैर नहीं छुए तो क्या हो गया, कौन-सा पहाड़ टूटनेवाला है ! और पैर छूने के चक्कर में अगर समय पर विद्यालय में नहीं पहुँचोगे तो जरूर दंड मिलेगा।''

बालक बोला : ''दंड से बचने के लिए भूल न सुधारना अपनी अंतरात्मा को दबाना होगा ! क्या विद्यालय के दंड से यह कर्तव्यपलायनता का दंड अधिक कष्टकर न होगा ?''

सभी मित्र अवाक् रह गये । वह दृढ़निश्चयी बालक दंड की परवाह किये बिना घर पहुँचा, माँ के चरणस्पर्श करके क्षमा माँगी और फिर विद्यालय गया। उस दिन उस बालक को अपना कर्तव्य पूरी दृढ़ता और निष्ठा से निभाने के कारण विशेष आनंद व आत्मविश्वास का अनुभव हुआ । जानते हैं वह बालक कौन था ? यह वही बालक था जो आगे चलकर भारत के महान स्वतंत्रता-सेनानी विनायक दामोदर सावरकर के नाम से विश्वविख्यात हुआ। माता-पिता व गुरु को प्रणाम करना, उनका आदर-सम्मान व आज्ञापालन करना - ये ऐसे सद्गुण हैं जो व्यक्ति को महानता की ऊँचाइयों पर पहुँचा देते हैं।

सहनशील, सुहृदय हो सदाचारी,
दृढ़ निश्चयी, बने निष्ठावान ।
निर्मल मन हो पर उपकारी,
विनम्र, सुशील, चित्त निर्विकारी,
जीवन बगिया की करे रखवाली,
करता सदैव, सर्व सन्मान।

गुरु वंदन करे ईश यशोगान,
सेवा-पूजा, सुमिरन-ध्यान,
प्रार्थना, योगासन, प्राणायाम,
संकल्प है जिसका बड़ा महान ।

– जानकी चंदनानी

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
www.livehindustan.com

दाँव पर हैं कानून के संशोधन, बढ़ रहे हैं बलात्कार के झूठे केस

अपने ही जाल में फँसे गैंगरेप की झूठी स्क्रिप्ट बनानेवाले

हिन्दुस्तान, गाजियाबाद। नवयुग मार्केट में एक न्यूज चैनल के दफ्तर में पत्रकार निगेशचन्द्र शर्मा द्वारा फिल्मी तर्ज पर गैंगरेप की पटकथा लिखी गयी, जिसका उद्देश्य था दो प्रतिष्ठित व्यक्तियों को फँसाकर मोटी रकम वसूलना।

पूछताछ में साजिश का शिकार बनी महिला ने बताया कि पत्रकार ने उसे बुलाकर रेप केस की स्क्रिप्ट लिखकर दी। नौकरी की बात कहकर नशीली चाय पिलाने और लोनी ले जाकर उन दो व्यक्तियों व चार-पाँच अज्ञात के खिलाफ बारी-बारी से रेप करके खुद को सड़क किनारे फेंकने की बात बतानी थी।

रेप की पुष्टि के लिए महिला को एक युवक के साथ संबंध बनाने को भी कहा गया। किंतु महिला के मना करने पर उसे चाय पिलाकर बेहोश करके एक युवक द्वारा रेप किया गया। फिर कहानी के मुताबिक उस महिला को सड़क किनारे छोड़ दिया गया। घटना का राज खुलने के बाद पीड़िता ने बताया कि साजिशकर्ता पत्रकार ने उसे २० हजार रुपये का लालच दिया था और रेप करनेवाला शहजाद, लोनी का पत्रकार था।

(निर्भया प्रकरण के बाद कानूनी संशोधनों से देश में बलात्कार के मामले कम होने के बजाय और अधिक बढ़ गये हैं। कानून का दुरुपयोग कर किसीको पैसे के लालच या आपसी दुश्मनी आदि कारणों से बलात्कार जैसे संगीन मामलों में फँसाना आम बात हो गयी है। अब तो न्यायालयों के न्यायाधीश भी कह रहे हैं कि कानून पर समीक्षा जरूरी है।)

मीडिया पर विश्वास न करें

– राम निरंजन पांडे, नवी मुंबई

मीडिया सही खबरें बिल्कुल नहीं दिखा रहा है, वह पक्षपात कर रहा है। मैं आम जनता से यह गुजारिश करूँगा कि जो टीवी चैनल पर दिखाया जाता है, उसके ऊपर विश्वास न करें। कभी बापूजी के यहाँ जाकर देखें तब समझ में आयेगा कि सच्चाई क्या है। हमने देखा है।

ज्ञानी की गति ज्ञानी जाने

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

शिवानंदजी महाराज ने ४० साल गुफा में तप किया । वटवृक्ष की जड़ों को पकड़कर नीचे गुफा में उतरना पड़ता था, ऐसी कंदरा में जाकर तपस्या करते थे । मेरे हाथ में उनकी कोई किताब आ गयी तो मैंने अपने साधकों से कहा : ''उनके दर्शन करना ।''

साधक गये, उनसे मिले और कहा : ''आशारामजी बापू ने हमको भेजा है ।'' आश्रम का सत्साहित्य आदि उनको दिये ।

उन्होंने एक किताब देखी । उसमें फोटो देख के तथा लेख पढ़कर बोले : ''इतनी छोटी उम्र में इतनी ऊँचाई तक पहुँच गये ! मैंने ७ साल तक परिश्रम किया, उसके बाद मुझे कुछ जानने को मिला और इन्होंने इतनी छोटी उम्र में इतने बच्चे-बच्चियों को भी रँग डाला !''

उनके शरीर की स्थिति ऐसी थी कि ज्यादा दिन तक शरीर टिक नहीं सकता था । खूब कफ हो जाता था । मैं उस समय हिमालय में था । उन्होंने कहा :

''मैं अब यह शरीर छोड़कर जाऊँगा लेकिन एक बार आशाराम बापू के दर्शन करने के बाद ही शरीर छोड़ूँगा ।''

वे सत्य-संकल्प महापुरुष थे । गुरुपूनम पर उनका एक शिष्य उन्हें अहमदाबाद आश्रम में लेकर आया । वे चल भी नहीं सकते थे, उस समय उनकी उम्र ९८ साल थी । वे सत्संग में बोलते तो ऐसा बोलते कि बोलते-बोलते स्वयं भी भावविभोर होकर अश्रुपात करते । जाते-जाते उनके अंगद शिष्य को कहते गये : ''देख, मैं तो चला जाऊँगा लेकिन तुझे एक सुयोग्य गुरु देकर जाता हूँ ।''

तब से उनका वह शिष्य अपने यहाँ आता है और इस स्थान (अहमदाबाद आश्रम) को अपने गुरुस्थान के समान ही प्रेम करता है ।

हिन्दू-मुसलमान सभी गाय माँ की हिफाजत करें

- शेख फखरुद्दीन शाह उर्फ गऊ प्यारा शाह

मैं छोटा था, तभी मेरी माँ का इंतकाल हो गया। तब मेरे अब्बा मेरे लिए एक नयी माँ (गाय) लेकर आये। वह मुझसे उतना ही प्यार करती थी, जितना मेरी असली माँ । वह दूध देती थी । मैं जब कभी उसके पास बैठता था तो वह मुहब्बत से मेरे हाथ, पैर, सिर चाटा करती थी। वह बड़ी प्यारभरी निगाह से मेरी ओर देखा करती थी। मैं दिनभर उसीके पैरों पर लोटता था, मगर उसने मुझे कभी तकलीफ नहीं दी।

एक दफा मुहल्ले का एक कुत्ता पागल हो गया। मैं अपनी गाय माँ के साथ धूप खा रहा था। इतने में शोर हुआ... 'बचो, पागल कुत्ता आया।' मैं डरकर रोने लगा मगर जैसे ही कुत्ता मेरी ओर झपटा तो मेरी गाय माँ ने अपने पैने सींगों से उस कुत्ते को अधमरा कर डाला और फिर आकर मुझे चाटने लगी।

उस रोज से मैं भी उसे सगी माँ की तरह प्यार करने लगा। उसके ५ वर्ष बाद वह गाय बीमार पड़ी। मैंने बहुत दौड़-धूप की मगर कुछ न हो सका। गाय माँ ने आखिरी साँस में भी मेरी गोद में सिर रखा था। मेरी तरफ प्यार की निगाह से देखते हुए आखिरी बार मेरे मुँह को चाटकर मेरी माँ इस दुनिया से कूच कर गयी। मैंने उस रोज अपनी माँ को खो दिया।

अक्षर दिल से गाय को मुहब्बत की जाय तो दुनियाभर के ऐशो-आराम घर में भर जायेंगे । हिन्दुस्तान अगर फिर से सोने की चिड़िया, इल्मो-हुनर का खजाना बनना चाहता है तो उसे गाय की हिफाजत करनी ही होगी। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि जो गाय की परवरिश सच्चे दिल से करेगा, उसे खुदा दुनियाभर की नियामत बख्शेंगे । मैं हर हिन्दू और मुसलमान से इस्तदा (प्रार्थना) करता हूँ कि यह सबका फर्ज है कि गाय माँ की हिफाजत करें।

(आवरण पृष्ठ २ का शेष)

यादशक्ति बढ़ाने के लिए महँगी व साइड इफेक्ट करनेवाली दवाइयों का प्रयोग।

प्राकृतिक उपहार जैसे तुलसी आदि का सेवन, प्राणायाम व सूर्योपासना से यादशक्ति में विलक्षण वृद्धि व परीक्षा में सफलता।

चाय-कॉफी, कोल्डड्रिंक्स के सेवन से सिरदर्द, स्मृतिनाश, चिड़चिड़ापन, मानसिक तनाव आदि विभिन्न बीमारियाँ।

बापूजी द्वारा बताये अनुसार देशी गाय के दूध व फलों के ताजे रस का उपयोग करने से शारीरिक व मानसिक आरोग्य।

पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण से बच्चों में दयाभाव और मानवी संवेदनाओं की कमी।

भारतीय संस्कृति के ज्ञान से हृदय में प्राणिमात्र के प्रति प्रेम, सबकी भलाई का भाव।

विडियो गेम, इंटरनेट, मोबाइल आदि से मन चंचल व काल्पनिक बातों में डूबे रहना।

बापूजी के बताये अनुसार ध्यान, जप व यौगिक प्रयोगों से मन शांत व एकाग्र।

फास्टफूड-बाजारू भोजन तथा असंतुलित व असमय भोजन करने से कई प्रकार के शारीरिक व मानसिक रोग।

पूज्य बापूजी द्वारा बतायी गयी दिनचर्या के अनुसार समय से भोजन करने तथा घर के बने शुद्ध, सात्त्विक भोजन से उत्तम स्वास्थ्य।

नैतिक शिक्षा के अभाव में बच्चों में परावलम्बिता का बढ़ना तथा निःस्वार्थ सेवाभाव की कमी।

सेवामूर्ति पूज्य बापूजी के सत्संग से स्वावलम्बन, परदुःख-कातरता एवं सेवा के संस्कार पाकर गरीबों और मरीजों की सेवा, गौसेवा करके जीवन की सच्ची कमाई की प्राप्ति।

मैकाले शिक्षा-पद्धति से बच्चे चिंतित, चिड़चिड़े, झगड़ालू, नकारात्मक व शुष्क स्वभाववाले।

बच्चों की मनोवैज्ञानिक स्थिति को समझते हुए उनमें भाईचारा, निश्चिंतता, निर्भीकता व सकारात्मकता का सिंचन।

वृक्षों की घटती संख्या एवं बढ़ते प्रदूषण की वैश्विक समस्या से समाज व देश की हानि।

बचपन से ही वृक्षारोपण एवं पेड़-पौधों की देखरेख व संरक्षण के संस्कारों का सिंचन, विशेषकर नीम, तुलसी, पीपल व आँवला।

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

लोक कल्याण सेतु का अध्ययन करते हुए...

साध्वी कात्यायनी
(श्रीराम कथावाचक,
कात्यायनी संस्थान)

आचार्य विकासजी
(दर्शनाचार्य,
हिमाचल प्रदेश)

आचार्य सुमित कृष्णजी
(भागवत कथाकार,
जम्मू-कश्मीर)

महंत श्री रामगिरि बापू
(महानिर्वाणी अखाड़ा)

शीतल पलाश शरबत, छाछ, टोपी आदि के वितरण अभियानों का शुभारम्भ

अखंड सुप्रचार संकीर्तन यात्राओं एवं प्रभातफेरियों की कुछ झलकियाँ

पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई हेतु हो रहे वैदिक हवन-यज्ञों की एक झलक

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।